दुःखक दुपहरिया

हमर किछु गीत-गजल सन' संकलन

गंगेश गुंजन



उत्तराधिकार

जाइत काल किछु नहि
क' गेलाह पिता हमरा नाम
घर ने खेत-खरिहान।
कहि गेलाह : "बाट चलैत काल
सतत् चलिह' बाम
तकर रखिह' ध्यान।
यैह द' गेलाह हमरा
पिता।
गंगेश गुंजन

दुःखक दुपहरिया

हमर किछु गीत-गजल सभ' संकलन

गंगेश गुंजन

प्रकाशक :
क्रा पी प्र
क्रान्तिपीठ प्रकाशन
अल्प आय फ्लैट सं॰ ३७, लोहिया नगर, पटना-८०००२०

पहिल संस्करण : १९९९

प्रकाशक :
क्रापी
क्रान्तिपीठ प्रकाशन
अल्प आय फ्लैट सं० ३७
लोहिया नगर, पटना-८०००२०

आवरण शिल्पी :
(गंगेश गुंजन)

पुस्तक रूप सज्जा :
प्रचार प्रतीक
१०८-ई, पॉकेट-के
शेख सराय फेस-२
नई दिल्ली-११० ०१७

मुद्रक :
एजियन ऑफ्सेट प्रिन्टर्स
एफ-१७, मायापुरी
इन्डस्ट्रियल एरिया फेस-२
नई दिल्ली-११० ०६४

मूल्य : पचास टाका मात्र





मित्र प्रिय प्रभास कँ
जे हमर गीत "हमरा नहि सोर
करू" कें युवालेखनक राष्ट्रगान
कहैत आ सुनैत रहथि,
आ कनियाँ ज्योत्सना जी कँ
स्मृति अर्पित ई कृति

गुंजन

ई हमर गीत-गजल

ई संकलन स्वाधीन लेखक हमर किछु छन्दोबद्ध रचना सब थिक। किछु त प्रकाशित, बेसी अप्रकाशित। एहि मे सँ किछु गीत कहीं नवगीत– अगीत कहीं। गजल कहीं, गजल सन कहीं। एहि रचनाक मूल अनुभव– संसार बनल अछि– जीवन प्रचण्ड रौदकेर दुःख भरल दुपहरिया, तकर सघन तीख अनुभूति, भरि सरासरी संवेदना, माटि– पानि– बरसात मे अथक मनुष्योचित आस्था आ आत. एकर आशावादि परिणतिक अपन विश्वासक निष्कंप रचना– दृष्टि– भरी जे जीवन– विमुख होयबा सँ बचबैत अछि। तेँ एकर नाम 'दुःखक दुपहरिया'।

पारंपरिक छन्दोबद्धताक विशुद्ध मानदण्ड पर एत जे कोनो गीत–गजल भेटत त से अपने सहजता मे। तकरा पाछाँ कोनो प्रयास नहि कयलिऐक–ए।
शास्त्रीय श्रेष्ठता–संवेदनाक सोही विद्वान एवं कवि प्रोफेसरक मानदण्ड पर जतहु–कतहु कोनो रचना बेछप लागय, तं से काव्यशास्त्रीय दोष शिरोधार्य। अभिप्रायपूर्वक कयल गेल छैक। चाहितिऐक त मेहनति क' क' हमहूँ मात्रा–तुक–छन्द–विधान आनि सकैत छलिऐक, मुदा से हमर गीतकार मन कें स्वीकार नहि भेल। ओतिना छोड़ि देबे ईमानदारी बुझायल। तें एक
आध ठाम एकहि शीर्षक रचना मे मात्रा भेद अखरत परंतु कृत्रिमता सँ बचबा लेल, हम ई जोखिम उठा रहल छी। हमर कवि–मनक लाचारी।

अपन पहिल गीत रचना सँ ल' क' आइ धरिक किछु बेशी मन परिन्न हमर गीत–गजल एहि मे अपनेक सम्मुख।

आभार!

अभिलषित स्वरूप मे ई संकलन नहि आबि सकैत जँ डा. रमानन्द झा रमण, डा. देवशंकर नवीन सदृश स्नेहीक सहयोग नहि भेटैत।

सर्जना– शैलू बाबू, बौआ कुकू, आ सबहक जड़ि हिनकर माँ अर्थात् सरु दाइक स्नेह–संरक्षण नहि भेटितय तँ कहाँ सँ अबैत ई पोथी।

कलाकार चि. शान्तनु पांडे एकर छपबाक समटा भार कलात्मक संलग्नता आ' अपनत्व सँ ऊघि रहल अछि। तें शानू कें बहुत आशीर्वाद तथा मुद्रण सँ जुड़ल सब प्रेस–बंधु कें धन्यवाद।

ई संग्रह हमरा जीवनक अत्यंत विशेष संदर्भ बनल। चारि जून, बौआक जन्म दिन, आ विवाहक शुभ अवसर पर छइस जून ९९ क' प्रकाशित भ' रहल अछि। हमरा जीवनक शिखर–सुख सन मे स्मरणीय रहत।

शुभ अवसर कें आशीर्वाद।

गंगेश गुंजन

सेक्टर–४/१०१६, श्री रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली–११० ०२२

कविता क्रम

गंधहीन फूलक मधुमास

किछु लिखल छल अहाँक नाम सँ
किछु लिखल हमरा नामे
मरुस्थलक बालुक सँ कागज
        अपना दुनूक गोटेक नामे।
आधा दूर पसाही पछवा
आधा पसरल वन खजूर
पुब सँ दाहो पच्छिम अन्हर
        लिखल दुनू गोटेक नामे।
बाँझ गाछ चतरल अन्हरिया
गंधहीन फूलक मधुमास
पात-प्रात केर झरकल हरियर
        यात्रा दुनू गोटेक नामे।
निरगुनियाँ दर्शन सन प्रतिपल
दुनू गोटेक मनक आधार
अपनहि घर मे अनचिन्हार
        अधिकार अहँक हमरा नामे।
जीवन थिक यात्रा दुक्खे दुःख
कहइत अछि किछु लोक-समाज
लोक मुदा तैयो हँसैत अछि
        दुनू गोटेक दुःखक नामे।
किछु बूझल छल अहूँक मन कें
किछु स्वादल छल स्नेहक धार
दुनू गोटेक सपना दहा रहल
        अनचिन्हार गामे-गामे।
किछु लिखल छल अहाँक नाम सँ
किछु लिखल हमरा नामे
मरुस्थलक बालुक सँ कागज
        अपना दुनू गोटेक नामे।

बिन कहल गीत अमूर्त्त

नहि बूझल भेल
देह, श्वांस प्रान
सभ त' छल अपनहि लोक अपन-आन।

बैसल-बैसल बाट देखैत बुंदपात
भीजल मन सतत,
भरल साँझ-प्रात
खसल कौखन चिड़ै जकाँ
भेल झुर अमान
नहि छल अप्पन तखन नै कलहु कोनो आन।

सभ यात्रा कयलक कातें कात
हमरा कॉट-कर्टया बनि क'
घेरने रहल किछु बात
बंद रहल हमरा लेखें
दरबज्जा आ दलान
अपने त' मृतप्राय. देलक नै हुलकी क्यो आन।

पिहकारी आ अट्टहास
घूमल सत्र गामे गाम
जड़ता वटवृक्ष महा ठाढ़ ठाम-ठाम
निभरोस आँखि में धधकल
दुनिया आ जहान
दु:खें कोइली टूटल भरलक एक तान

कात में करौट लैत रहल अनचिन्हार. अप्पन आन।

लेभरल अरिपन सन सबहक नजरि

ससरि गेल छू क' इतिहास बहुत रास
सभ कान्ह पर जरैत तरहत्थी भरि
लेभरल अरिपन सन सबहक नजरि
जतेक रंगक बीतल दिन-राति सभ
सुनगि-सुनगि दुखा जाइछ मनक ओ बात
मन अपनहुँ त' ई बुझीअलि भरि।
ससरि गेल छू क' इतिहास बहुत रास।
छाती मे एक "मकबरा" भरि स्मृति
आँजुर में एक मरुस्थल भरि बालु
आँखि मे एक आकाश भरि रिक्तता
भरि धरती अंतर हृदयक निसबद्दता
जे अप्पन लोक गेल संबन्धी सभ छोड़ि।
ससरि गेल छू क' इतिहास बहुत रास।
घून खायल सभक सभ प्रतीक्षा
ठाम-ठाम ठाढ़ भेल दुट्ठ स्नेह
मुँह नुका क' भागि रहल लोक सभ
सुखल नदी पर किछु बालुक घर
गेल सोखि समय एकर धार बहुत रास।
ससरि गेल छू क' इतिहास बहुत रास।
सतरंगा छपुआ सन मृदु बिहुँसी
झरकि गेल आँचरक किनारी सन
घन अन्हार में कएल किछु संबोधन
अछि हेरायल टूटि गेल आसरा सन
आगू अछि महल फेर बनयबा लेल
एक संग ठाढ़ अछि ताश बहुत रास।
ससरि गेल छू क' इतिहास बहुत रास।

एकटा पारिजात अहाँक नाम

हमरा नहि सोर करू हमर बाट काटल अछि
गामक सिमान जकाँ हमर मोन बाँटल अछि।

सीपी में बन्द मणि अहाँक स्नेह
भोर-किरण सूर्यमुखी अहँक देह
करिया पहाड़ तऽर, प्राण हमर जाँतल अछि।

एक गोट पारिजात अहाँक नाम
एक टा बबूर-वन हमर गाम
दुनू गोटेक बीच समय निस्सा सँ मातल अछि।

अहीं प्रेम-आँखिक अमर भाषा
हम कंठ मोकल सन-अभिलाषा
अन्हरिया डोरा सँ प्राण हमर गाँथल अछि।

गामक सिमान जकाँ हमर मन बाँटल अछि।

गाम कें प्रणाम

कविता हम कहब अहाँक नामक
हम गीत गायब अपन गामक
टूटल-फाटल घरक चार-टाट
भम पड़ैत बड़ उदास सुन्न बाट
डेगे डेग चिन्ताक धूरा उड़ैत
बिरड़ो मे घुरमैत सुखायल पात
वर्णन नहि हो, दिनक ढलानक
हम गीत गायब अपन गामक।
बनि गेलय जेना कोनो अनठीया देश
अनचिन्हार भेल सभक सभ परिवेश
चानन काका, ननकू भायक मुँह
सभ जेना धेने हो साधुक भेष
कनैत घरे घर स्वर समदानक
हम गीत गायब अपन गामक।
घरे घर कछमछ नवतुरिया लोक
रेल मे कटल बेटाक पुत्रशोक
स्वप्न डाहि जीवैत पड़ल गूनल
सभ कंठ एका एकी मोकल
सएह करुण कथा सब जवानक
हम गीत गायब अपन गामक।
लागत पजरल जकाँ एक-एक हृदय
उजरल उपटल सन एक-एक टोल
गाछ निपात सूखल पोखरि-इनार
फेर अकाल छोड़ि गेल उपास अन्हार
खिस्सा ई कमला-बलानक
हम गीत गायब अपन गामक।



मुक्तक:

अहँक जीवन हमरे जकाँ पहाड़ रहत
हमर ई मन सेहो राति-दिन अन्हार रहत
जं क्यो सुनत कहियो ककरो सँ ई खिस्सा
दुनू गोटे कें से एक रंग बताह कहत।

प्राण-पाती : छ:पाँती:

मन किछु पड़ैत अछि उदास सन
काँपि-काँपि जाइत छी बसात सन।

आँखि मे अछि ओ मिझायल चन्द्रमा
सिहकैत अछि साँझ हमर प्यास सन।

कन-कन करै-ए बाँहि मन प्राण
हाथ बान्हल जीवैत लहास सन।



एक

अहाँ कहू जे अहाँक बात हम कोना मानी
जे लोक हित विरुध्द, बात से कोना मानी।

ओना तं दु:ख बहुत रास अछि अहँक मन मे
मुदा से खास दु:खक बात हम कोना मानी।

जे गीत एकसरुआ एकान्ती बात करय
से गीत खास अपन बात हम कोना मानी।

अहाँ उदास कियेक मने मे गाम बसाउ
कोनो टा घरजाना बात हम कोना मानी।

जे फूल, गाछ, पानि, पवन, बन्द हो एक ठाँ
से बन्द जीवन केर बात हम कोना मानी।

नदीक धार जकाँ बस्ती-बस्ती पीबय
यनी तँ बात, नहि तँ बात हम कोना मानी।

अहाँ आ हम दुनू कात रही अनुरागी
हृदय मे धार बहय-लोकगीत हम गाबी।

जं सभक मनक अन्हरिया नहि दूर करय
से वेद वाक् भने, बात हम कोना मानी।

दू

सुनू अहूँ ई हमर मनक उद्गार सुनू
अहो मे लोक वेद सँसे संसार बुझू।

ओना उदास तँ हमहुँ रहै छी अहीं जकाँ
तही उदास मनक एकरा उद्गार बुझू।

समय टहकि-बड़कि कँ पसरल अलकतरा सन
तही जरैत सड़क पर हमरा ठाढ़ बुझू।

अपन ई आँखि, एकर फूल, गीत कर खातिर
ई प्राण जायत हमर, हमरा तैयार बुझू।

अहाँक गाम जकाँ हमरो अछि गाम एकटा
अपन तँ गाम सँ हमरो अछि बहुत प्यार बुझू।

महान संस्कृति, विद्या, आदर्शक गौरव
ढहल-ढुहल बिना इसकूल पिलखवार बुझू।

सुखायल कमला कर भूख-प्यास सँ कलमल
करैत आबादीक जिनगी पहाड़ बुझू।

रूसलि कमला कर धार पिलखवार जतय
एतक लोक सभक जिनगी कहार बुझू।

हमर अदूल सुखा जाय से छै औरियाओन
मुदा अहाँक सपत हम छी तैयार बुझू।

हमर समाद कँ अकानि रहल अछि मौसिम
समाद गौआँ औ दिल्ली-दरबार सुनू।

सुनू अहूँ ई हमर मनक उद्गार सुनू
एही मे लोकवेद सँसे संसार बुझू।



तीन

अपन दुनूक कतेक असकर जवानी अछि
अपन दुनूक केहन दुख भरल कहानी अछि।

ने कहि सकी ककरो अप्पन मोनक ममता
कते लाचार छी अप्पन केहन पिहानी अछि।

जखन सँ साँझ, फूल बूझल हजोरिया भेल
केहन बताह तखन सँ ई जिन्दगानी अछि।

उदास पसरल संसारक एकान्ती मे
जे बाजि सकलहुँ नहि सैह बौक बानी अछि।

टोल भरि पसरल दुःखे हारल दुपहरिया
तकैत बाट पर अपने दुनूक निशानी अछि।

तखन फूलक लाथे कोखन तोड़य तुलसी
अहाँ बिना हमर आँगन केहन विरानी अछि।

चारि

गीत अनर्गल व्यर्थ गजल
कविता कविक प्राण अँटकल।

अन्हरिया चिन्तन अधिकांश
बीच बाट पर खाधि खुनल।

सुखक हजोरिया फँद कतहु
गाछ रोपल सब बाँझ रहल।

क्रूर रौद धरती फाड़ल
धरती बिनु फसिलेक पड़ल।

धह-धह पजरैत घोर अकाल
रूसल मेघक गंगाजल।

छहरि बिनु पंछीक पियास
फुनगल गाछ सुड्डाह जरल।

टोल मजूर पड़ैत उपास
भूखें बच्चो कानि रहल।

के जानय ई अकाल कियेक
आबहु अपंक वर्ष बनल।

कवि गणेशक मन जरैछ
तँ दुर्भिक्षक विषय कहल।



पाँच

मन हमरो एना बताह नै होइत
जँ जिन्दगी मे एना दाह नै होइत।

हमहुँ मरैत छी लोकक खातिर
हमरो दुनिया एना तबाह नै होइत।

से बात आर किछु नै कोशिश छल
हाथ हमरो एना अबाह नै होइत।

से कोहन खास भ' सकै छल सफर
जँ अहाँक मन मे एना डाह नै होइत।

आगि लागल कोनो की अहीँक घर
संग रहने एना सुड्डाह नै होइत।

गाम खकस्याह होइत चल्लै गेल
बाँचि जाइत तँ एना थाह नै होइत।

अथ उतरल छी एकसरे कोशी
संग बहितहुँ तँ ई अथाह नै होइत।

छ

कहल-सुनल माफ बंधु
सब हिसाब साफ बंधु।

एहिना चुपचाप सहो
भरि जिनगी श्राप बंधु।

अध रस्ते छुटलहुँ जँ
तकरे संताप बंधु।

तिल तिल ई केहन भोग
स्नेहो भेल पाप बंधु।

दुःखे दुख पसरल अछि
आगाँ भरि बाट बंधु।

प्रत्याशा में पजरल
मोनक परिताप बंधु।

अर्पित अन्हरिया कें
कथा साफ-साफ बंधु।

जीवन-खेला मे चेरा
गुन्जनक निसाफ बंधु।

सात

स्नेह सँ समझा रहल छथि
जिन्दगी सँ जा रहल छथि

एक सम्बोधन छोड़ाक'
नव नाम बना रहल छथि

एहि सरिता कें सुखा क'
आन धार बहा रहल छथि

प्राण लेने जाथि जे, से
भरू धैर्य बुझा रहल छथि

हम चुर्ह छी झूठ दुनियाक
वचन सँ बहला रहल छथि

नेह सँ समझा-बुझा क'
जे अपन घर जा रहल छथि

केहन करुणाहीन जीवन
सौंपि क' से जा रहल छथि।



आठ

जीवन कहाँ छल कहियो एहि रंग मे उदास
साँझोँ मे जल शीतल लागल रहय पियास

जीवन कहाँ छल कहियो एहि तरहँ बे रंग
मनक सरस सब कल्पनाक उड़ि गेल-ए रंग

जीवन कहाँ छल कहियो उपलक्ष्यहीन दिन
सबटा हो सरंजाम जुमल मुदा हृदयहीन

जीवन कहाँ छल एहन सन एकसर एना एकांत
हो चारु कात स्निग्ध शान्ति, अन्तर अशान्त

जीवन कहाँ छल तेहनो टूटल ढहल देवाल
जीवन कहाँ छल कहियो खसल एना बेहाल

जीवन तँ छल कहियो सुन्दर सनक हरिण
ई कहाँ छल अइ जकाँ हतप्रभ कंगाल।

नौ

(गजल निगुनिया)

जानल दुनियां
मन निरगुनियां।

ई जग लोभी
देह दुल्हिनियां।

मनक धुन पर
तन हरमुनियां।

सांसक पिंजड़ा मे
प्राण चुनमुनियां।

भेल विदागरी
चलि गेलि कनियां।

बाट उदासी
एक निरजनियां।

बूझल: दुनियां
मन निरगुनियां।



बारह

नहि पूछू एहि शहर केर बात किछु
जरि रहल अछि राति-दिन ई मने मन।

मिझयबा केर इंतिजामे छै मिझायल
के छुअय से दुःख सँ झरकैत तन।

चलैतछि ओहुना बसात किछु तेहन सन
सड़क कें पयेर ऊठल छै जलन।

आब त कहितो नै छै कयो कोनो बात
एत' धरि जे नगर केर गंगा, पवन।

कठिन अछि विश्वास करब बात ई
अछि गवाही मुदा कविता, हमर मन।

कोना झरकल गेल ई गीतक नगर
कोना कुरुप भेल शब्द अक्षरक तन।

तेरह

(बाढ़ि)

दुःखक ई सिलसिला अछि आ जी रहल-ए लोक
तकरा मे चैन नित्य कष्ट पी रहलए लोक।

घर दहा गेलैक बाढ़ि मे बच्चा समेत सब
सड़कक कात पशु बनल जी रहल-ए लोक।

एक्हु साँझक खोराक नहि अगिला फसिल धरि
जीवा लेल ई लाचार कोना जी रहल-ए लोक।

सभ किछु गमा क' भागि क' टिल्हा पर ऊँच मे
फूटल-फेकल बासन जकाँ हद जी रहल-ए लोक।

अछि पहिरना ओछाओन जलै छैक ओढ़ना
जबकल गन्हाएल पानि खा आ पी रहल-ए लोक।

सभ वर्ष जकाँ एहू बाढ़ि मे कारप्रदार
रिलीफ नामे अपन जेबी सी रहल-ए लोक।

चलि तँ पड़ल-ए जीप-ट्रक बाँटक ई काफिला
ताही रिलीफक आस मे बस जी रहल-ए लोक।

कहि तँ गेलाह-ए परसूए दस टन बँटत अनाज
अखबार-रेडियो भरोसे जी रहल-ए लोक।

घोषित तँ छथि देश मे पर्याप्त अछि अन्न
सड़ैत गोदाम मे उपास जी रहल-ए लोक।

उमेद मे जे आब अएताह संस्था स्वयंसेवी
द' जायत बासि रोटी दान, जी रहल-ए लोक।

बड़ कठिन अछि समय एहन ई राक्षस अन्हार
किछु भ' रहल-ए तय आ तें तँ जी रहल-ए लोक।

चौदह

रक्त जे त्राण एखन बाँचल अछि
ओना तँ आर किछु ने बाँचल अछि।

देखि क' एहि समाजकेर रंग-ताल
आब मनोरथ ने कोना बाँचल अछि।

बैसी कलहु आ मनक गप्प करी
टोल मे दोस्त कहाँ बाँचल अछि।

भोर दुर्दिन मे लग ठाढ़ हो जे
से तेहन लोक कहाँ बाँचल अछि।

खढ़ सँ कोंच पजेबा तखन सिमेंटक घर
बनि गेलय, घर कहाँ बाँचल अछि।

भेल खत्ता सनक बड़का पोखरि
आब भथल इनार बाँचल अछि।

ओना तँ बाट खरंजा बनि गेल
मएह आब गाम-गाम बाँटल अछि।

स्नेह केर दीप बड़ काँपि रहल
तेल पानी मे सटल बाँचल अछि।

भरि हृदय गप्प, हँसी पिहकारी
भेल की, टोल कोना बाँचल अछि।

आब गाम-गाम अस्पताल लगै-ए

एहू वर्ष ओहिना बसात बहै-ए
बेर बेर किछु ने किछु बात लगै-ए

जे किछु परिवर्तन सत्र अखबारी भेल
मरकारी तंत्र अंग खायल लगै-ए

जनता केर संकट आर विपत्तिक दिन
आरो किछु बेशी गढ़ायल लगै-ए

मौसिमक हो अन्याय आ की हुनकर
एकहि रंग दुनू मिझराएल लगै-ए

चढ़ैत आकाश पर अन्न सभक दाम
सभटा दोकान अनचिन्हार लगै-ए

ताकू मटिया तँ ठन-ठन बजै-ए टीन
तेँ आब बेशी घर अन्हार लगै-ए

जहर सँ भरल देह आ घोर मनोरोग
आब गाम-गाम अस्पताल लगै-ए



दिन तबधल तऽब

दिन तबधल तऽब,
देह दुपहरियाक रौद
छाहरि ताकि-ताकि ई प्राण

बालु खापड़िक उलाइत अन्न

देथि शुभेच्छु स्नेह-सुझाव-

औ गुंजन जी रहू प्रसन्न,
ईह थिक सृष्टि येह व्यवहार
समयक कनियाँक बनू कहार

सजल पालकी ऊघैत जाउ
मौसिम सब सँ जुनि अगुताउ
जेठ-श्रेष्ठ केर आशीर्वाद,
छत्ता तानल माथ उधार।

पानिक नहि, पसेनाक धार
चूबय टप-टप अपन कपार,

अनुभव सँ पाकल सब लोक,
जीवितहि हमर मनाबथि शोक

जीवाक जँ ई रहि गेल ढब, हकन कनैत भरि जन्म रहब।

अप्पन छी तें उचित कहब-
बदलु बाट आँखि बदलु,

गाछक छाहरि मार्ग चलु
बहुत गाँटब भेटत ओहि ठाम

आदर्शक बाना छोड़ू,
मात्र शब्द धरि लऽ ओढ़ू
मन पसिन्न सुविधा लोढ़ू

ई सभटा छोड़ू सिद्धांत, बेमतलब थिक वेद-वेदांत

बाँकी बेश, रहओ सिद्धांत-
पोथी मे, किछु अवसर पर, मंच, सभा मे, किन्तु ने घर
सौंसे शीतल-शीतल छैक, रौद मे बेश इजोरिया दैत

ठेहा ठेही उज्जर मखमल
हरियर घनगर गाछे गाछ
मंद पवन सुरभित सब बात
जुनि झरकाउ, रहू स्थिर
बड़ अमूल्य थिक इहो शरीर

तीन टा दू-पाँती

कोना बुझी जे कोनो इल्म छनि कि अनुभव छनि
उठैत लोकक नव आकांक्षाक अनुभव छनि

सहैत जाइत छी सब दिन बेगारी बेमोने
नकर कलेश, अभाव, दुःखक ने अनुभव छनि

ओना कहैत छथि ओ मुँह पुरुष जे सब टा हैत
मुद्रा से हएत कोन मूल्य पर, ने अनुभव छनि

मुक्तक : एक

सस्त अछि ई मन औनाइ लेल
महग बड़ आघाती विश्वास
बिन थम्हने चलब ब्रेमतलब थिक
सेंह सन्त भरिया उच्छ्वास।

मुक्तक : दू

नदी नाह बाढ़ि दहायल बस्ती
करुणा एहिना निष्फल आर व्यर्थ
छपि-छपि क' बहैत जाइत रोज एखवार
सभ प्रात गाम-घर धार पार।

मुक्तक : तीन

सस्त अछि दुःख गाथा
निर्गाछलक मुँह जवानी
लगातार अनुवादित जाइत मनुक्ख
नकली सब खिस्सा-पिहानी।



करइथ नेतागण भाषण मनुष्याभास

भेटला ढेरी रास देशकेर गीत गवैया
मुदा भेंट छथि कहाँ एकर गछय वाला
बड़ घोखल जाइछ एकर रक्षा-रक्षा
लूटि रहल एकरो रक्षा करयवाला।

अन्वर्शक माला तँ बड़ गाँथल जाइछ
कर्मपुष्प केर पँखुरी सब नोचल जाइछ
पाठ एकता केर देशक जे पढ़ा रहल
सैह लोक देशक गाछक जड़ि कोड़ि रहल
शिक्षा, समता आ श्रमकेर महिमा गबैत छथि
सैह अपढ़-असहायक कंठ मोकैत रहैत
छथि

राष्ट्रधर्म थिक अद्भुतिक सगहर इतिहास
करइथ नेतागण भाषण मनुष्याभास
एकरा इनका देल धर्म केर आगि आरि क'
एकरा कुंठित मारल व्यक्तिक जाति-स्वार्थ सँ।
बेशी लोक तँ छथि एहि मे ढोलपिट्टा गायक
अप्पन कारिख देशक दामे छोड़बय वाला।

दुपहरियाक रौद मे

एत' 'ओत' जत' ततय
एकहि रंग उदासी
पसरल अट्टहास करैत
कमलेश्वर काशी

पेट भेल अछि धनुष
भूख बेरोजगारी,
नेताकेर पच्चर मे लटायल युवा पीढ़ी-
सेवारत क्रीत दास क' रहल खवासी।

बीसम सदीक एहि उन्नत जनतंत्र मे
सत्ताकेर राजनीति-
मंदिर मसजिद धर्मक ठीकेदारीक
पोसुआ मधुमाछीक
मधुक व्यापार करय
पटना करांची। सभ टा देशोक नामे।

कानय प्रवासी-
समय केहन असह दुःखक
लोक तेंद विकल व्यग्र अपना अपनी
उनटल नावक लोक जकाँ मँझि धार
हाथ पैर मारि मारि-
डूबय सँ बचबा लेल डूबि रहल
ऊब डूब करैत
मृत्युमुखी छोड़ैत उसाँसी।

धह-धह महगीक पजार
डाहि-डाहि गाम गाम
कतओक एकचारी मे सूतल नेना समेत
कयल सुड्डाह, बच्छा-गाय।
बाँचिक दू सेर कोनो अन्न-
मसुरी कि नवका राहड़ि आ' कि खेसाड़ी
सब टा खकस्याह करैत।

मात्र वर्ष सैंतीसक एक तरुण
बंशी आबादी कें तबाह करैत-
मात्र ओ मनुक्खक सन लगैत व्यवस्था।

तथापि जयनगर सँ दिल्ली धरि छयैक
घोखैये तनैये जनकल्याणी उपक्रम
नब अर्थ कर्मसूत्र बीस-बीस
बर्ख सन् उनैस सय चौरासी।

आब मुदा बौंक बहिर जनता नहि सुनैये
एहन लोकतंत्रक दम्मा उकासी।
चुपचाप पेट हाथ बान्हि क' अकानि रहल
बनल साकांक्ष आ' तैयार-

दुपहरियाक रौद मे,
नव पन्गल छोट छिन गाछक छाहरि मे
एका एकी जमा भ' रहल किछु हकासल पियासल
मुक्तिक प्रत्याशी
विपत्तिक रौद कें बिलयबा लेल
किछु गोटय एक टा
नव गाछ तर।

विद्यापतिक नोर

देसिल बयना सबजन मिट्ठा
बेश बनि गेलय हँसी ठट्ठा
भाषा आर मैथिल जनता केर
पड़ल भरना कट्ठा कट्ठा।
नेता एखनहुँ मंचक धरनि
हुनका नहि किछु करय पड़नि
खाली पुजबथि पैर लोक सँ
मोटगर फूलक माला गर्दनि।
भाषण-भूषण बेश उच्च स्वर
द' सकैत छथि पहर दू-पहर।

मुदा न चिन्ता असली बातक
सैकड़े सत्तरि एखनहुँ नहि घर
शिक्षा, भोजन-वस्त्रक बात
जन-जन केर एहि कष्ट सँ कात
अपने जीवथि रहथि सुभ्यस्थ
कियेक सहथि कलेशक अवघात ?

तैयो बजैत नोराइत आँखि
बजित बजैत ग' र भरि जाइनि
लोकक दुःख कहिते-कहिते
सपरिवार सुख मे रहिते।

लोक-प्रेम कयलनि सुड्डाह
अपन स्वार्थ जनता केर प्राण
कतेखन भाषा कखन धर्म
लड़ा भिड़ा जीयथ छनि कर्म
फुसिक भेदक ऊँच देबाल
ठाढ़ करथि फोड़थि दस लोक

शुद्ध हृदय, जनता बौआय
भैयारी बीच माथ फोड़ाय

सभ समस्या ठामक ठाम
पड़ल बेरोजगार अथाह

भेल अछि मिथिला गामक गाम
डिग्री चिचिआहत अछि काम

बोझ लगैत प्रतिभाक विलाप
कयो ने सुनय दिअय नहि कान
पैंतीस छत्तीस बर्खक होइत
लोक ने तखनहुँ भेल जुआन
ई हाहाकारक परिवेश
जरैत जाहि मे सौंसे देश।

तैं मे लेसि विभेदक आगि
लोड़ितहि रहब, रहत की शेष ?
के अनकर अछि के अपन
ई समाज कहन अवदान
अछि ने सुरक्षित भोजन-वस्त्र
आ' ने निरापद लोकक प्राण।



राजनीति केर दाव मे मारू धोबिया पाट

जतेक कहबनि कहि दियनु ओ नहि देता कान
अपने स्वार्थक ध्यान मे ओ छथि बनल अकान।

भोर-साँझ दुपहर भने रहू अहाँ बेचैन
ओ पुछताह ओ कंगुगव किनका भेंट देलैन ?

अहाँक पसेना अहाँक देह हुनकर की हानि
सब विचार बनि गेल अछि सत्ताक पथर धोआइनि।

सौंसे गामक भुखमरी सौंसे गामक आहि
छथि नेता एहि क्षेत्र केर मुदा कोन परवाहि ?

वाणी मे किछु कहि दियै बड़ दिव धिक पाखण्ड
समय सुनारू राजनीतिक नेत बनल अखंड।

राजनीति केर दाव मे मारू धोबिया पाट
खसय चित्त जे खसि पड़ओ अहाँक खूजय बाट।



बहय एहिना बसात बुधियार

बहय एहिना बसात बुधियार
लोक पर एहिना करय प्रहार
बहय एहिना बसात बुधियार।

विचारक पसरय अन्हरजाल
घोषणा आश्वासन केर टाल
वर्ष, दिन, पल लचरल जाय हाल

बहय एहिना बसात बुधियार।

नित्य बैसय ठाम-ठाम सेमिनार
सेठ आ साहु कें पड़य हकार
पाँचताराम पर्व-तिहार

बहय एहिना बसात बुधियार।

देल जाय जनता कें चोटी
सुखायल सांवत्सरीक रोटी
अनाजक फोटो करू अहार

बहय एहिना बसात बुधियार।

लोक धरती पर सँ उठि गेल
आब भोटक लिस्ट बनि गेल
बनल योजना-महफाक कहार

बहय एहिना बसात बुधियार।

चेतायथ कविक शब्द औ लोक
बनू निर्भीक सजग निधोख
नहि तँ एहिना रहत कचार

बहत एहिना बसात बुधियार।

अहँकेर घाम आ शोणित सँ
अहीँक विरुद्ध चलत व्यापार
कहल जायत सब थिक अहीँक

मुदा नीलाम रहत आधार।

रहब सब अन्हरिया मे ठाढ़
सहैत सामन्तो घात प्रहार
आँखि केर ज्योतिक करू प्रसार

करू औ लोक-शक्ति तैयार
बन्द हो ई बसात बुधियार।

जीवन जे कहि रहल

सुनू बंधु, जीवन की कहैये
लोक आब नोरे मे बहैये।

चुप बहिर गाम-गाम घर सब मे,
अंतर नहि जागब मे सूतब मे
अपनहि आँखिक अन्हार सहैये।

कए-कए हाथक मिझा रहल मशाल
प्रतिदिन ओझरबैत एक जाल
उमंगिया हरिन-पैर सन मनक
नित्य अनन विश्वासे फँसैये
सब सुख तकलीफे कसैये।

पड़ल दू घर बीच एकपेड़िया
एकाकी सुन्नसान प्रेत बस्ती
कटल एक गुड्डी ईमनदार हँसी
अपनहि आगाँ मे सब किछु देखू
खढ़ पात केर महल कोना क' ढहैये।

आदमी आब किछुओ नहि कहैये
नोरे मे बहैये
चुपचाप रहैये।

संकल्पक चामर

एहू वर्ष ओहिना बसात बहै-ए
बेर-बेर किछु ने किछु बात गड़ै-ए।

माटिक गमकैत फूल ऑजुर भरि सँ
अतचोंक खिड़की केबाड़ हिलै-ए।

देखि रहल स्वप्न जेना आनक घर मे
खुलल चेतनाक समाद कहै-ए।

दूभि-पात, गाछ, गीत सहमि गेल सभ
एहिना सभ गनि-गनि आघात सहै-ए।

भुलकल छै पाँखि चिड़ै मुनने अछि आँखि
सोझाँ मे अनवरत बसन्त झड़ै-ए।

कान्ह परक चुनमुन्नी फेर उदास आई
हमरो मन एहिना उदास रहै-ए।

परिवेशक ज्वाला मे छटपटा रहल
लोक समक दुःखक इतिहास कहै-ए।

चाहै-ए मन ई बसात छाड़ि दी
चिनगी तरहत्थी मे धएल रहै-ए।

फाड़ल पन्ना जकाँ विखिन्न स्वर कतक
दु टोप नोर बड़ मन पड़ै-ए।

भोरे सँ सिहकल सिरमाक ई बसात
चानन्काठीक मन सुनगबै-ए।

बनओ ई हवा हमर संकल्पक चामर
हमहूँ तैयार छी आब सहि ने होइ-ए।

हारल सन गीत कथा कहि ने होइ-ए।

विष-बंधन

एक-एक क' अंक-अंक मे जोड़ि रहल छी
नागर खाता-बहीक खजाना कें प्रति दिन।

खूब चमत्कार अजब तमाशा बात विचित्र
घून खायल जाइत लगैत रहलौं पर किएक
अनुभव सँ डर-धरल उदासी मे घेरायल
एक टा बौक स्तब्धता मे पाथर होइत दिन।
अनुभूति ई केहन अपन अछि केहन कठिन।

सोची तँ ई थिक मात्र द्रव्यक आत्म दया भरि
ई पूरा दुष्चक्र अर्थ-कामना प्रताड़ित
संभव इहो जे आबि गेलय ई मनें अर्जित
एहि अभाव आघातो जीवन यापन ल'क'
एकहि व्यथा केर भास कहाँ धरि गाबी प्रतिदिन।

कत कोन ठाँ कोन दोस्त घर चौखटि पर
है लगैत अछि सत्यें आइ ई बड़ कठिन
आबो बड़ किछु स्वप्न चढ़ल सवारी पर
पाँखि ने लोहक पंछी कें जे बिनु तेल उड़य
दाम ईंधनक हाल सेहो आकाश चढ़ल
तें तँ सपना सीढ़ी-साँपक खेल भेलय
ऊँच चढ़ल कि साँप सँ गीड़ल जाइछ
प्रतिदिन।

जीवन धीरे-धीरे कोना बनल चल गेल-ए विष-बंधन।

आँखिक पोखरि सुखा गेल छैक

लोकक दुःखक कथा कहू की
के अछि कतेक उदास
गाछ जकाँ सब लोक ठाढ़ अछि
भुतियायल छैक बाट।

लागल हाट बिकाइत सब किछु
रंग-बिरंगक माल

गीत नाद आ हल्ला गुल्ला
भरि बजार ई हाल

लोक ठाढ़ अछि कात मे गुमसुम
ल'क' खाली हाथ,
कीनत की बस्तु कत' सँ
हताश।

आँखिक पोखरि सुखा गेल छैक
कतहु ने भेंट फुलायल
मनक गीतक बिसरल भनिता
एखन छैक कापी सेहो हेरायल

प्राणक परिछनि गीत चुमाओन
बनल अभाव उदासी,
सुखक सब गीतक बिसरल भास
लोककेर बौक बनल जीवन।



तय करी जे की करी

बड़ असह भेल-ए ई कंचकोह दिन
तहिना राति खकस्याह
आब किछु तय करी जे की करी।

रोपि अबैत छी गाछ
झरकि जाइत अछि
फुलयवा-फरबा सँ पहिनहिं
झंखड़ि जाइत अछि
फेर रोपी कोना, कत'कँहन गाछ
जान' पड़त से तत्काल
नवका फूल-फड़ लेल
आब किछु तय करी, जे की करी।

जेंकि बञ्जर माटि जोति-कोड़ि
तैयार कयलौंहें/असमयक बाढ़ि
वा पानिक-पाथर दुआरे
बेकार भेलैहें/मौसमक जे नेत
ठैक से बड़ मुदैया
रूखि एकर मोड़ी जतेक जल्दी
आब किछु तय करी, जे की करी।

लाल मेघ पीयर करिछौंन करय
करंजक उत्साह पर पाथर धरय
अजोहें फल सन टुटल मनोरथक लेल
आब किछु तय करी जे की करी।

पड़ल पन्नाक मकड़जाली फाड़ि देलों पर
पसरल रेशमी महाजाल काटि देलों पर
पयर ओझरा जाइछ फेर सँ बाट में
डेग जे रस्ते में ओझरा जाइछ।

तेकरो भेद जनबा लेल
आब किछु तय करी, जे की करी।

भ'कऽ धूर-झमान खसि पड़ी अचेत
वा अन्हरिया संग संझे लड़ि मरी
से चेतना आनी
भोर, सूर्यक रौद आ स्वाधीन
धरती-बसातक ब्योंत करबा लेल

आब किछु तय करी, जे की करी।



चेतना-गीत

जिनगी पहाड़ जुनि करू
रस्ता अन्हार जुनि करू
बुझू हुनकर बुधिबधिया
स्वार्थक छथि भरल पथिया
आब एना समय कें बेकार जुनि करू।

जहिना ओ कयलनिहें तबाह
हुनको होंनि बापक बियाह
आब कोनो दोसर व्यवहार जुनि करू।

ओ तँ कहता किछु-किछु फेर
काटू गर्दनि भाइए केर
चेतू, अपनहि गला प्रहार जुनि करू।

जएह थिक पाँजि आ पाठि
सएह बनय धर्म आ जाति
जातिक नामे अपन संहार जुनि करू।

लोक सब एकहि होइ-ए
जे कोनो समाज जीबै-ए
एना सोति-बाभन आ राड़ जुनि करू।

भगवतीक थान थिक हमरे
मस्जिदोक अजान थिक हमरे
भेदक कोनो देवाल ठाड़ जुनि करू।

सलहेसक गीत गबैया
सबहक छथि कमला मैया
कोनो बाँट-बखरा आब आर जुनि करू।
परिपंची सबकें बुझियौ
तकर नष्ट बुद्धियौ चिन्हियौ
हटठे विश्वास, खबरदार जुनि करू।

जिनगी पहाड़ जुनि करू
रस्ता अन्हार जुनि करू।

डूबल अन्हरिया मे प्राती

भरि-भरि आंजुर साँझ उदासी
डूबल अन्हरिया मे प्राती
भोर अभावें भरल आँचर
सुनइत कोनो समाद-

"आब सबहक दिन बदलै जायत
पेट भरि नेन्ना-भुटका खायत
वस्त्र सबकें हैतैक पहिरात्र
सभक घर नोक सँ छाड़ल जायत।"

इ सुनि-सुनि गेल कान पथराय।
सुनय ने आब जरूरी बात
कान ततबा बनि चुकल बहीर
ठाड़ मतसुन्न बौक सब टोल
कहू की कतेक दुखी ई समाज।

मनुख पावनियो दिन उपास
कंठ मे तप्पत धह-धह प्यास
गामकेर सूखल अछि इनार
कहू की कतेक पियासल लोक।

ठाढ़ अछि बिन पातक जे गाछ
माटि सँ माँगैत कहन विकास
माटि सँ तकैत नव विश्वास।

हमर मन हमर मनोरथ केर घर

हमर मन हमरे मनोरथ केर घर
जाइ-ए के आब एकरा कत' छोड़ि।

ऋतु सब आबय करय बारंबार प्रणाम
देश हिन्दुस्तान छैक तकरे तं नाम

स्वयं समय जाय अविक' एत' ठहरि
जाइ-ए के आब एकरा कतहु छोड़ि

एक सं एक नदी-निर्झरक स्वर्ग
नील नभ धरि हिमालय आंगन जकर

सात रंगक मेघ केर आंचर-कवच
जाइ-ए के आब एकरा कतहु छोड़ि

क्षप्रेम केर जे फसिल उपजाबैत माटि
नेह-न्यौछावर विकल संसार सौंसे

भोर-संध्या मौं हमर ई राति भरि
जाइ-ए के आब एकरा कतहु छोड़ि

तोप बम-बन्दूक मे पगलाइत दुनिया
एकटा आन्हर सफर मे पड़ल दुनिया

आबओ एही ठाम सुस्ताय प्राण भरि
तेहन अप्पन माटि जाय के कत' छोड़ि

मन कथा

बहुत दिन बीति गेल तैं
मन पड़ल अछि गाम
बहुत दिन बीति गेल तैं
मन पड़ल अछि नाम।

नाम-गामक एहन साँझ आ भोर
नाम-गामक एहन एकात्म पछोड़

नाम-गामक एहन जौंओं रूप
नाम-गामक एहन संबंधो अनूप

खुजि पड़ा गेल सएह अनुपम प्रिय चिड़ै सन

घूमि आयल पास मनक
गाम आ ओ नाम दुनू
एक रंग बनि गेल हुलास-

ऊपर सँ भारी-भारी,
अंतर मे जीवन किछु भेल
आनन्द सँ चैन।

एकहि बाटे

बाट पर किछु चेन्ह अछि
आँखि मे चित्रक नगर
चर-चांचर मन अछि, से
एक टा सुनसान घर
जाहि मे नहि क्यो रहल
आस नहि विश्वास नहि
ऋतुक हास-विलास नहि।

कंहन थकनी सँ बनल
ई क्लान्त देह, कंहन ऊबल
प्राण सँ बेचैन साँस कंहन
टूटल शक्ति केर एक-एक डेग
कतेक लघु ई हम, दुःख कतेक रास
भ'गेलय एही मनक
पाहुन हमर।

करी चिन्ता-सोच हम तैयो कियेक
अधिक लोकक एकहि रंगक,
तनिक खिस्सा एकहि तरहक
छनि कियेक-
एहन कोन स्थिति-परिस्थिति?

हे हमर जीवन।
मुदा हारू अहूँ जुनि,
अहाँक सन संताप मे अछि
एहि समाजक लोक लाखक लाख।

फेर बाजत बाँसुरी

जनै छी हम फेर बाजत बाँसुरी
दुःख आ संताप डूबल मन मे
फेर ऊठत धड़धड़ी।
फेर बाजत बाँसुरी।

ठुठ्ठ गाछो फेर पनगत पोर-पोर
झरल पात सेहो धरत नव रूप हरियर
देत सूखल गाछ फेरो नव मज्जर
सुगंधि पसरत गाम मे आ भरि गली।

फेर सूर्यक किरण संगहि आँखि खोलत
भ्रमर उड़ि-उड़ि चुमत टटका सब कली
कोंढ़ मे छूटत फेरो सँ तरुण हृदयक
तार मे फेर कँपकँपी।
फेर बाजत बाँसुरी।

फेर सँ बदलत इजोरियाक स्वाद
फेर सिहरत प्रकृति पुरबा बसात
चली, दी चलि क्षितिज धरि, स्वागतो हुलकी
आँखि मे अनुराग भरि क' रंग
दस डेग बढ़ी, लग चली
ऋतुक अभिनन्दन करी।

फेर बाजत बाँसुरी हम जनै छी
हृदय धुक-धुक करत जे अछि चुप बहुत दिन सँ
उठत, आ स्पर्श क' जायत कोनो जादुक छड़ी।

फेर बाजत बाँसुरी।



देहक बँसुली

तृप्तिकामी देह केर बाजल-ए बँसुली
सुनत सृष्टि आब जीवन केर महागान
विकल कण-कण
बहुत दिन सँ हमर प्राण।

सुरक व्याकुल गुंजनक प्रियतम निमंत्रण
वेदना साजल सुवासित ई परम मन
क' रहल अभिलषित
प्रिय प्रस्ताव, ध्यान।

ई धरा आकाश, जल आ पवन ज्वाला
भरि चलत प्रकृति फेरो उद्दाम प्याला
महासुख सँ मंत्र जन्मत
करत चेतन स्नान।

तृप्तिकामी देह केर बाजल-ए बँसुली
सुनत सृष्टि आब जीवन केर महागान।

अड़हूल फूलक गीत

बाड़ी भेल बाड़ी मे अड़हूलक गाछ भेल
हमरा दरबज्जा पर लाल सुरूज ठाढ़ भेल,

घास बोन हरियर तरकारी केर जंगल
अन्न फल फलहेरी सभ गेल उचंगल
किछुओ नहि दिन बदलल रहलौं पछुआयल
खगल केर खगले छी ओहिना रिनायल।
आब कनी दिन फीरल दिनक जे पसार भेल
हमरा दरबज्जा पर लाल सुरूज ठाढ़ भेल।

नित्यक पसाही आ पछवा मे हमर गाम
भेल गेल खाक सियाह चुपचाप ठामे-ठाम
एक चारी धधकलए साँझे-पराते
बनि क' भुतही गाछी ठहकलए हमर गाम
आब ससरफानी किछु हटलए अन्हरियाक
आब रक्त टुह-टुह रंग, आर कनी गाढ़ भेल
हमरा दरबज्जा पर लाल सुरूज ठाढ़ भेल।

सबटा निस्बद्द रहय लोक माल जालक थैर
भेल रहय बाधक ई बाट काँट कुशक वन
चौंछल भरि देह सँ बहैत छलैक पानि पानि
सोनित की भेल लोक-देहक सेहो ने जानि
घूरत नहि, धार सुखा रूसि कहि गेल छल
आब लाल रंग-जल बहैत ग्राम-धार अछि।
हमर गामक मेघ मे लाल सुरूज ठाढ़ भेल।

बाड़ी भेल बाड़ी मे अड़हूलक गाछ भेल।